## पद १८९

(राग: ललित - ताल: त्रिताल)

ऊठ त्वरेनें मनमोहना रे। गोधन घेउनि जाई वना रे।।ध्रु.।। आरत्या घेउनि उभ्या गोपी द्वारा। दर्शन इच्छिति तुझें सकुमारा।।१।। हंबरोनि तुज बाहाती धेनु। उदया आलासे तो निजभानु।।२।। माणिकप्रभुसी वेद जो गाय। उठवी तयाप्रति यशोदा माय।।३।।